22.4.24

Pg. 1 D+

Tender Heart High School, Sec-33-B, CHD.

कक्षा - सातवीं   शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी   साहित्य (पाठ-2 'हार की जीत' का शेष भाग--- लेखक-सुदर्शन)

पुस्तक - नवतरंग - 7

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

पाठ-2 'हार की जीत' का शेष भाग आपको 22.4.24 को भेजा जा रहा है।

बच्चो, आज हम पाठ को आगे पढ़ने से पहले थोड़ा हम पाठ का पूर्व भाग पढ़ेंगे। जब बाबा भारती ने अपाहिज बने डाकू खड्गसिंह को घोड़े पर बैठा लिया तो उसने धोखे से झटका देकर बाबा भारती का घोड़ा छीन लिया तब भागते हुए डाकू को रोककर बाबाजी ने इस घटना के बारे में किसी को भी न बताने को कहा। यह बात सुनकर खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसने हैरान होकर बाबा भारती से पूछा, "बाबा जी, इसमें आपको क्या डर है?" बाबा भारती ने उत्तर दिया, "लोगों को यदि इस घटना का पता चला, तो वे दीन-दुखियों पर विश्वास न करेंगे।" यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही नहीं रहा हो।

ऐसा कहकर बाबा भारती वहाँ से चले गए, परन्तु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Dt. 22.4.24
Pg. 2 B+

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-2 'हार की जीत')

फूल की नाईं खिल जाता था, कहते थे, "इसके बिना मैं रह न सकूँगा।" इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे, परन्तु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह खयाल था कि कहीं लोग दीन-दुनियों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया के बाहर निकल ठंडे पानी से स्नान किया। उसके पश्चात इस प्रकार, जैसे कोई स्वप्न चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परन्तु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल की प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँव को मन-भर भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए। घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया। अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

22.4.24

Dt
Pg 3 B+

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-2 'हार की जीत')

बहुत दिन से बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते फिर वे संतोष से बोले, "अब कोई दीन-दुखियों से मुँह नहीं मोड़ेगा।"

बच्चो! यह पाठ यहाँ समाप्त हुआ। अब तक जो पाठ पढ़ाया गया है, आशा है सभी बच्चों को समझ में आ गया होगा। अब मैं आपको कुछ कठिन शब्दों के अर्थ लिखकर दे रही हूँ। शब्दार्थ:-

पश्चात- बाद में
प्रकट - जाहिर, प्रत्यक्ष
सन्नाटा - शांति
खरहरा - लोहे से बनाई जाने वाली चौकोर कंघी
हृदय पर साँप लोटना - ईर्ष्या होना
फूले न समाना - बहुत खुश होना
अंकित - छप जाना
भाँति - भाँति, तरह, प्रकार से
मन-मन भर का - बहुत भारी 40-40 सेर का
दास - सेवक
रात्रि - रात
प्रतीत - लगा हुआ, मालूम हुआ
भ्रांति - भ्रम
कीर्ति - प्रसिद्धि
कंगला - गरीब
विस्मय - आश्चर्य, अचंभा
प्रयोजन - उद्देश्य, कारण

बच्चो! अब मैं आपको गृहकार्य दूँगी।

गृहकार्य:-

सब बच्चे कराए गए शब्दार्थ को अपनी अभ्यास - पुस्तिका में लिखेंगे व याद करेंगे। पृष्ठ-11 पर दिए संक्षेप में प्रश्नोत्तर लिखने का प्रयास करेंगे।
धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner